Vol II Issue V Nov 2012

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidiciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 5, Nov. 2012
ISSN:-2231-5063

Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

GRT

महिला उपन्यासकार : दशा और दिशा

ज्योति मुंगल

हिंदी विभाग
यशवंत महाविद्यालय, नांदेड (महाराष्ट्र)

सारांश :

देश की आबादी का आधा हिस्सा महिलाओं का होता है। वह निरंतर पुरूष की प्रेरक शक्ति रही है। किंतु यह भी इतनाही सत्य है कि वह सदैव उपेक्षित रही है, शोषण का शिकार बनती रही। लेकिन 20 वीं शती के उत्तरार्ध में न केवल भारत में बल्कि विश्व में नारी की स्थिति को क्रांतिकारी कदम उठाए गए। वह धीरे–धीरे अपने अधिकारों के प्रति सचेत होने लगी। उसकी स्थिति में सुधार करने के लिए कानुन बनाए गया। सन 1975 से 'महिला दिवस' मनाया जाने लगा। इस दृष्टि से नारी शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, अधिकार आदि को महत्व प्राप्त हुआ। नारी विषयक लेखन साहित्य में जब आया तो उसे नारी विमर्श नाम दिया गया। नारी अब अपने अधिकारों के लिए लड़ने लगी।

प्रस्तावना :

साहित्य जगत् में नारी की समस्याओं, उसकी पीड़ा का वर्णन साहित्य में होने लगा, जिसमें लेखिकाएँ सामने आने लगी। वह साहित्य जगत् में लोकप्रिय भी हुई। उनकी इस लोकप्रियता का आधार अनुभूति की सघनता, विचार की तीव्रता, स्वानुभव का प्रत्यक्षिकरण एवं मार्मिक चित्रण आदि है। ''पुरूष के रू–ब–रू खड़े होकर मानवीय संदर्भ में अपनी अस्मिता की पहचान की बेचैन कोशिश न्याय की दुहाई न देकर स्वयं न्याय छीनने की जद्दोजहद, अतीत और वर्तमान की विसंगतियों को ध्वस्त कर सुखद भविष्य की नींव धरने की सुकून भरी चाहत यहीं तो है महिला लेखन।''[1] आज महिला उपन्यासकारों की विषय सीमा विस्तारित हुई है। वह अनेकों विषयों पर अपनी कलम चला रही है। प्रमुख महिला उपन्यासकार हैं– उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, कृश्णा सोबती, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, राजी सेठ, नासिरा षर्मा, मृणाल पाण्डे, सूर्यबाला, शशिप्रभा शास्त्री, शिवानी, दीप्ति खंडेलवाल, सुनीता जैन, कुसुम अंसल, प्रभा खेतान, मालती जोशी, मेहरून्निसा परवेज़, निरूपमा सेवती, चंद्रकांता आदि लेखिकाओं ने विविध कोनों से नारी मुक्ति की समस्याओं को औपन्यासिक रूप दिया है।

कृष्णा सोबती के 'दिलोदानिश' में स्त्री–पुरूष संबंधों में निहित षिक्षित पुरूष की सामंतवादी मानसिकता तथा स्त्री के शोषण को सूक्ष्मता से चित्रित किया है। चित्रा मुद्गल ने अपने उपन्यासों में शारीरिक श्रम करनेवाली मजदूर स्त्रियों की व्यथा–कथा को प्रस्तुत किया है। सूर्यबाला ने गरीमामय शिक्षित नारी की हलचल को कलात्मक वाणी दी है। नारी की अभिजात्य अस्मिता के सशक्त दर्षन राजी सेठ की प्रौढ़ रचना 'तत्सम' में होता हैं। जाति, धर्म और देश से परे जाकर नारी मुक्ति की समस्या को देखनेवाली नासिरा शर्मा ने 'सात नदियाँ एक समंदर' उपन्यास ईरान की पृष्ठभूमि पर लिखा। मृदुला गर्ग का 'कठगुलाब' एक प्रौढ़ चिंतनपरक उपन्यास है। जो नारी के लगभग सर्वांग शोषण को सशक्त वाणी देता हुआ नारी के प्राकृतिक सामर्थ्य का प्रकाशपूर्ण रेखांकन करता है। 'छिन्नमनस्ता' उपन्यास में अपनी भूमि से विस्थापित मारवाडियों के जीवन–संघर्ष को प्रभा खेतान प्रस्तुत करती है।

समस्त महिला उपन्यासकारों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम वर्ग में नारी की प्रकृति और मनोविज्ञान का चित्रण करनेवाली रचनाएँ आती है। जिसमें नारी की पारिवारिक और सामाजिक स्थिति स्पष्टतर होती चली गई है। इस वर्ग की रचनाओं में 'डार से बिछुडी' की पारो, 'अनारो' की अनारो, 'बेघर' की संजीवनी, पुरूष की रूढ़िवादी व संकीर्ण विचारधारा के कारण कष्ट उठाती है, फिर भी पुरूष के प्रति विद्रोह का हल्का–सा तेवर उनके माथे पर नहीं है। 'मित्रो मरजानी' की सुहागवंती 'मेरे संधीपत्र' की शिवा नारी के परंपरागत रूप को मूर्त करती हैं जहाँ वे पुरूष और परिवार के अस्तित्व में अपने व्यक्तित्व का संपूर्ण लय कर एक ममतामयी माँ के रूप में दृष्टिगत होती है।

दूसरें वर्ग की रचनाएँ सामाजिक सरोकार से नितांत अछूती हैं। सत्य यह है कि सामाजिक यथार्थ और मानवीय संबंधों की गहरी पड़ताल के रास्तें ही मानव मन की भीतरी परतों को छुआ जा सकता है । कृष्णा सोबती की 'डार से बिछुडी' से लेकर 'दिलोदानिश' तक समस्त कथाकृतियाँ, मंजुल भगत का उपन्यास 'अनारो' ममता कालिया का 'बेघर' प्रभा खेतान का 'छिन्नमनस्ता' नासिरा शर्मा का 'ठीकरे की मंगनी' एक ओर यदि संस्कारग्रस्तता के कारण कष्ट कर जीवन व्यतीत करनेवाली नारी की कथा कहती हैं तो दूसरी ओर शिक्षित जागरूक एवं अधिकार सम्पन्न होने के कारण नारी के दृश्टिकोण और व्यवहार में आ रहे परिवर्तनों को रेखांकित करती है। इस वर्ग की रचनाओं में विद्रोह एवं असंतोष का स्वर अधिक मुखर है।

उषा प्रियंवदा के संपूर्ण उपन्यास साहित्य में विविध परिस्थितियों, परिवेष एवं पात्रों के माध्यम से नारी का 'वस्तु' से 'व्यक्ति' रूप में 'ट्रान्सफार्मेशन' चित्रित किया है। 'पचपन खंबे लाल दीवारें', 'रूकोगी नहीं राधिका' यह उपन्यास प्रमाण है। है। 'पचपन खंबे लाल दीवारें' की सुशमा पारिवारिक परिस्थितियों के दबाब तले जहाँ निर्णय के विकट क्षणों में अपनी दुर्बलता एवं संस्कारभीरूता का परिचय देती है वहीं 'रूकोगी नहीं राधिका' भावना एवं प्रतिशोध के बहाव में सुखद भविश्य को अपनी मुट्ठी से रीतते देखती है। वहीं 'शेष यात्रा' की नायिका की असहायता को बेचारगी में बिखरने नहीं दिया है, वरन् उसे रचनात्मक बाना पहनाकर नारी के अंतस् में छिपी शक्ति को उजागर किया है। इस उपन्यास में लेखिका मानो कहना चाहती हैं कि नारी स्वयं को अबला समझकर जीवनपर्यंत पुरूष की उंगली थामे रह सकती है और अपने शक्ति एवं अपने आत्मबल का साक्षात्कार कर सम्मानपूर्वक स्वतंत्र जीवन भी जी सकती है। लगभग इसी विषय को लेकर निराले अंदाज में 'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास में मृदुला गर्ग ने उठाया।

महिला उपन्यासों में जहाँ विवाह संस्था के प्रति कई जगह अनास्था प्रकट हुई है वहीं यह कथाकार परिवार एवं संतान के सुख और सुरक्षा के लिए भीतर से उसके प्रति आस्थावान है। लेकिन विवाह संस्था के वर्तमान स्वरूप के पुर्नमूल्यांकन की मॉग सभी महिला उपन्यासकारों ने व्यक्त की है। विवाह में पुरूष श्रेष्ठता की एकांगी पक्षधरता को स्वीकृति क्यों दे ?क्यों पत्नी को अपनी स्वतंत्र सत्ता एवं व्यक्तित्व को पति की षख्सियत में लय करने की बाध्यता हो ?स्त्री–पुरूष की समानता का समर्थन कर यदि वह पति–पत्नी दोनों से समभाव से दृष्टिकोणगत उदारता की माँग करे तो क्या हार्दिकता, पारस्पारिक सौहार्द अपने आप ही उनके संबंधों में उपस्थित नहीं हो पाएगा ?इस सोच की दिशा में महिला उपन्यासकारों का लेखन आगे बढ़ रहा है। इनकी यह विशेषता है कि उन्होंने नारी ऱ्हदय के विविध कोणों को परखकर बिल्कुल नई, तलस्पर्शी तथा ईमानदार अभिव्यक्ति दी है।

महिला उपन्यासकारों का लेखन पुरानी पीढ़ी की नारी के समझौतावादी दृष्टिकोण का विरोध करता है। ऐसा नहीं कि पुरानी पीढ़ी की नारी सामाजिक रूढ़ियों एवं दोहरे नैतिक मानदण्डों से क्षुब्ध नहीं थी अथवा पुरूष द्वारा भोग्या एवं तिरस्कृत समझा जाना उन्हें आहत न करता हो। वे विवश थी क्योंकि मौजुदा हालातों को तोडने की ताकत उनके पास नहीं थी। फिर भी 'रामायण' की नायिका सीता द्वारा शील की अग्निपरीक्षा के बाद पति राम की स्वीकृति मिलने के बाद भी पति का ही त्याग कर धरती में समा जाना क्या स्त्री का पुरूष के प्रति निशेध नहीं ?उसी प्रकार 'महाभारत' में गांधारी द्वारा अपनी आँखों पर पट्टी बांधना छलपूर्वक किए गए विवाह का विरोध ही तो दर्शाता है। पर इन दोनों नारियों को भारतीय आदर्श नारियों के कलेवर में ढालकर समाज के सामने प्रस्तुत किया है और सहना भी नारी का गुण बनकर परंपरा से उसपर थोपा गया है। महिला उपन्यासकारों ने ऐसे कवच को हटाने का कार्य किया है। विशिष्ट दैहिक सरंचना के कारण शारीरिक रूप से नारी पुरूष का मुकाबला नहीं कर सकती थी और आर्थिक स्वावलंबन के अभाव में मुलभूत भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पूर्णतया पुरूष पर आश्रित थीं। फलतः मानसिक विकलांगता उन्हें प्राणों की रक्षा हेतु पुरूष के समक्ष घुटने टेकने को विवश करती रही। कृष्णा सोबती के 'दिलोदानिश' उपन्यास की बउआ जी का पुरूष की ज्यादतियों की ओर से आँख मूँद लेने का शतुरमुर्गी अंदाज भी इसी मनोवृत्ति का परिणाम है। उसकी मुग्ध विवषता के विरोध में है नई पीढ़ी की 'कुटुंबप्यारी' का उबलता आक्रोश – ''सारी ज्यादतियाँ क्या हमी को सहनी होंगी ?'' यह प्रश्न ही नहीं बल्कि विद्रोह का ऐलान है और पत्नी के रूप में आत्मसम्मान और अधिकार पाने की जंग भी।

महिला लेखन स्त्री के आर्थिक स्वावलंबन को शिद्दत से महसूस करता है। वह केवल संघर्षरत नारी की उपलब्धियों का अंकन नहीं करता, तो उसकी यंत्रणा की तीव्रता का अनेक कोनों से चित्रण करता है। नारी यह जानती है कि धार्मिक मान्यताओं और सांस्कृतिक मूल्यों के परों पर टिका कोई भी सामाजिक ढॉचा सदियों की आस्था पाकर इतना मजबूत हो उठता है कि वर्षों का असंतोष उसे हिला नहीं पाता। अतः उपलब्धियों की ठोस जमींन पर होने के लिए उसे लंबे संघर्ष की आवश्यकता है, जो इनके उपन्यासों में दिखाई देती है। पुरूषों की बँधी–बँधाई दृष्टि से भिन्न नारी को व्यक्ति रूप में देखने का पक्षधर महिला लेखन है, जहाँ पत्नी, जननी, पुत्री, प्रेयसी, भगिनी, पुरूष सापेक्ष भूमिकाओं की परिधि से मुक्त विशुद्ध नारी रूप में उसकी पहचान हो।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net